

①

॥७॥३॥

॥ श्रीरामविजयत्रितय अष्टम्याय प्रारंभः ॥



2

[illegible]

71921

गायेवेळवेळ॥ मित्रास प्रकाश आगळा॥ पांडिका सया सणावे॥ ७॥ सेंतां शिधराक्षे
 मां शंति॥ जै सें वदे तो मंदमति॥ प्रेमकाशिका भक्ति॥ सांगावे हें चि नवला॥ ८॥
 जै सें पंडित तुहि ज्ञान संपन्न॥ करा सरस राम कथा श्रवण॥ हे सर्व दां ह्यण तांदु
 षण॥ वक्त्या शिष्ट गटे तें॥ ९॥ असो पुढे ध्याई कथा निश्चीति॥ सांगितलिरावणा
 चि उरति॥ कौशल्य दशरथ जयो ध्यावति॥ नेउन विधिने स्थापिलि॥ १०॥ सुर्य
 वंश भुषण अद्भुत॥ जयो ध्यापति राजा दशरथ॥ जाचि पदराणि विख्यात॥ कुश
 ळ बहुल कौशल्य॥ ११॥ सुमित्रा कै कै स्वरूप वंत॥ दोघि वरिराव दशरथ॥ अनि
 क साल शतें प्रणिपात॥ भोगांगना सुंदरा॥ १२॥ ज्ञान कळा कौशल्य सति॥ सु
 मित्रा केवळ सद्गति॥ कै कै ते कपट प्रहृति॥ रजत मयुक्त सर्व दां॥ १३॥ केवळ

(3)

क विवेमुर्तिमंत॥ तोचिबजपाळसुतदशरथ॥ जोपरमयोधधारणपडित॥ धनुर्विदेस
वैजाणे॥१४॥ आंधारमाजिशब्दउत्त॥ तेथेंचिबाणमारिअवचित॥ धन्यसाचिको
॥२॥ शल्यता॥ विरदशरथाबैसानसे॥१५॥ परियोरिनसेपुत्रसंतान॥ याकरितांराजेंद्रउ
द्धि॥ पुत्रंविणशुन्यसदन॥ बोलतिशास्त्रपडित॥१६॥ शरिरव्यर्थप्राणविण॥ ता
सण्याविणपंचबाण॥ दयेविणव्यर्थज्ञान॥ शंतिवांचुनिवैराग्य॥१७॥ संपत्तिजै
शिध्दमेविण॥ पंडितांवांचुनिसभाशुन्या॥ किरहणिविणव्यर्थज्ञान॥ दिपेंविणसद
न॥ जेवि॥१८॥ वेदांतज्ञानावांचुन॥ कोरडिवित्यतिजैशिशुन्य॥ कींससात्रावांचुनि
दान॥ किंस्नेहेंविणबंधुजैसे॥१९॥ किंजळेंविणवापिका॥ किंनयेविणनगरदेखा॥
किंनसिकाविणमुरवा॥ शोभाजैशिनयेचि॥२०॥ किंफळेंविणतखर॥ किंनामस

दा

॥२॥

रणे विण मंदिर ॥ ते से पुत्रे विण वैश बें पवित्र ॥ सर्वथा हि न के बि ॥ २१ ॥ जै सारा जा
 दशरथ ॥ संत तिला गिं चिता क्रांत ॥ सदा विपिन गहन हिंडत ॥ मिस मग ये बें क
 रो नियो ॥ २२ ॥ ना वडे छत्र सिंहासन ॥ ना वडे मान चातुर्य गायन ॥ बहु ते के ले प्र
 यत्न ॥ परि संतान न के बि ॥ २३ ॥ लों दशरथें स्वल्प देखिलें ॥ दोघे पुरुष आपण
 वधिलें ॥ आपिये के स्त्रिये शिमारि ॥ अपराधें विण तलता ॥ २४ ॥ गजब जो
 नि उटिला दशरथ ॥ कोणा शिन बाले मुख वत ॥ वशिष्ठ ग्रहा शिजा उनि त्वरित ॥
 न मोनि नि स्वप्न सांगत सं ॥ २५ ॥ गुरु ह्मण बार दुष्ट स्वप्न ॥ तिन श्वापदे ये ईवधो
 न ॥ मग याचि शांति करुन ॥ दोष दुर करावे ॥ २६ ॥ गुरु आज्ञे ने मग ये शि ॥ राजें
 इनि घाला ते दिवशि ॥ वासर मणि गेला बसाशि ॥ परि श्वापदन सांपडे ॥ २७ ॥

(५)

॥३॥

ण

पडला न संत न थः कार ॥ ये कला हिं डे न पवर ॥ धनुष्या शिला उ नि शर ॥ शोधिकां
नार ते धवो ॥ २८ ॥ तो ये का सरो वरा चे ति रिं ॥ राजा गु स बै से रक्षा वरि ॥ काना दि
वो दु न ते अ व स रिं ॥ कि र्णि जै के सां च क ॥ २९ ॥ तो ते णे मार्गे श्रा व ण ॥ आ ला मा य
बा प धे उ न ॥ दि व सा ब हु त बा धि त उ ष्ण ॥ ह्य ण नि रा त्रि ग म न क रि ॥ ३० ॥ दो धें र
ध्धें र वं दिं ये उ नि ॥ आ व ति र्थे हिं डे म दि नि ॥ त्या स रो व रा चे ति रिं य उ नि ॥ उ भा
रा हि ला ना वे क ॥ ३१ ॥ तो ते र ध्धें ह्य ण ति आ व ण ॥ आ ह्या शि क र विं उ द क पा न ॥
जै क लां जै शि या व च ना ॥ का व डि आ र ट वि लि ॥ ३२ ॥ हा तिं कु मं ड ल ये उ न ॥ ॥३॥
जि व नि प्र वे श ला श्रा व ण ॥ द श र धें सां च क जै को न ॥ नि र्वा ण बा ण सो डि ला ॥ ३३ ॥
स य क्षें बा ण ह र ई वै स ला ॥ हा तिं चा कु मं ड ल खा लें प ड ला ॥ दे ह मु मि व रि प डि ला ॥

॥आ०॥३॥

प्राणचालिलाश्रावणाचा॥३४॥ ह्मणे कोणा सजाय्याचा वाण॥ करित आला नामस्मरण॥
हृदयनिमाले संपुर्ण॥ केलें पावन मज्जकर्म॥३५॥ जैक तो मनुष्याचें वचन॥ नृपजवळि
आला थांबोन॥ तव तो पडला सेश्रावण॥ रामस्मरण करित नि॥३६॥ मग ह्मणे कर्म पा
पकारि॥ ह्या पडलिहें मज्ज करि॥ श्रावण ह्मण राया न करि॥ खेद कं हिं सर्वथा॥३७॥
मासिं माय बापें रथ्यें दिन॥ त्यांशि करि वेंडु कंदे पान॥ मग मिसोडिन आपला प्राण॥
ससजाणरा जेंद्रा॥३८॥ दोघें रथ्यें बल तपाहिं॥ त्यांचे शिंवे शिकोणि नहिं॥ दशरथ
गैवरला हृदई॥ शोका कुकिल जाहाला॥३९॥ श्रावण ह्मण दशरथा॥ उदक दोघां पा
जुन त्वंत॥ मग हे सांग विवार्ता॥ नाहिल रिजिव त्या गिति॥४०॥ उदक नेतं अयोध्या रा
णा॥ रथ्यें ह्मणति बार श्रावणा॥ तव तो न बोले वचना॥ कां हि के लिया सर्वथा॥४१॥

(5)

॥४॥

कांरे श्रावणानबोलशि ॥ उदकमागितलेंयं व्हेंड निशि ॥ बोर ह्मणोनिकोप रुशि ॥ शिण
लाशिरे पाउसा ॥ ५२ ॥ उदयाचकिं मा बळ मित्र ॥ शेषसांडिल भुभार ॥ तिरुतापे लरोहिणि
वर ॥ तर्ही क्रोध अणुमात्र नये तुलें ॥ ५३ ॥ जैसंगगे येनि मेळ जिवन ॥ तैसं श्रावणा तु
झे मन ॥ ताक्या कांरे नबोल शिव न ॥ राजा जैको निगे वरे ॥ ५४ ॥ मग बडराज पुत्र बा
लिला ॥ म्या अवचित तें श्रावण मारिल ॥ तब तहि धरणि वीर टाकिला ॥ प्राण जाला
कासा विसा ॥ ५५ ॥ आठउनि श्रावणाचे पुण ॥ दोये जा कंदति दिन वदन ॥ जैसा पुत्र हो
त्रिमुवन ॥ शोधितं हि नसां पेड ॥ ५६ ॥ हा हार पुत्र श्रावण ॥ हा हा गेलें निधान ॥ आमु
चे जात ति प्राण ॥ श्रावण वदन दाविका ॥ ५७ ॥ या ब्रह्मांड मंडपा आंत ॥ श्रावण जै
साना हि पुण्यवंत ॥ जै शिवै कुंट आणिल धुकें त ॥ मिनाथि ॥ तैसा भाविल माता पिता ॥ ५८ ॥

॥४॥

(५४)

लोबकरि मात्र पित्र भजन ॥ लोकोत्थं च ब्रह्मज्ञान ॥ तोशडशास्त्रं आरापटो न ॥ त्याचें
 दर्शन न कोवें ॥ ४९ ॥ त्याचें जप तप अनुष्ठान ॥ दान आध्यायन श्रवण मनन ॥ कळाचा तु
 र्य व्यर्थ ज्ञान ॥ जैसं भाषण मद्यपियानें ॥ ५० ॥ तेण अभ्याशिल्याचौ सष्टिकळा ॥ त्याअव
 धियाचि ज्ञान्याविकळा ॥ जयाशिमा लापितियाचा कंटाळा ॥ त्याच्या डाळान शिवावें ॥ ५१ ॥
 माता पिता गुरु देव ज्ञाण ॥ नारि देव ते सगळे समान ॥ तेचि परम ज्ञाता ज्ञाण ॥ नमो डिवचन
 श्रेष्ठें ॥ ५२ ॥ ह्मणे निपुत्र येक श्रावण ॥ आठ उनीस याचे गुण ॥ दोघें पडत मुर्छा येउन ॥
 जावया प्राण येक वटला ॥ ५३ ॥ मग श्राप दलि प्राण जाता ॥ ह्मणति तुहिं पुत्र पुत्र करिंतां ॥
 प्राण जाउं देतु साद शरथा ॥ आमुच्या असा तात्काळा ॥ ५४ ॥ मग तेहिं सोडिला प्राण ॥ रायें
 तिघांचें केले दहन ॥ उत्तर कार्य संपादुन ॥ अयोध्ये शिपातला ॥ ५५ ॥ मनात हर्ष मानि नृपवर ॥

अयोध्ये चारा जादशरथ ॥ लोप्रताप अर्केरणपंडित ॥ दैत्यजिंकिलक्षणमात्रे ॥ ६३ ॥ मगमा
 लुकिजाणिनिजरथा ॥ मुकपाटविलेंदशरथा ॥ मालुकिसागेसमुकवातो ॥ अनारदिकारण
 जे ॥ ६४ ॥ अैकोनिदैत्यप्रतापअहुत ॥ लात्काकरथिं बैसलादशरथ ॥ लेंकैकैरायाशिप्रि
 यअसंत ॥ कायबोलततेधवां ॥ ६५ ॥ मिसमागमेंयेईन ॥ संग्रामलुमचापाहिन ॥ राजा
 ह्मणेतुंसकुमारपुण ॥ युध्यकंदनतस्थानि ॥ ६६ ॥ येरिह्मणेतुल्लिजवळिअसतां ॥
 मजमयनाहिंसर्वथा ॥ अैसेंतीचेंबोलेणवैकता ॥ चेतलिरथावरितेधवां ॥ ६७ ॥ निरा
 कमाणेंतेवेकिं ॥ येउनिजालचपकमातुकि ॥ देवदैत्यांचेरणमंडकिं ॥ रथअकस्मातउ
 त्तरिला ॥ ६८ ॥ वैकुटाहुनिवैनतासुत ॥ हिराब्धीतटिउत्तरअकस्मात ॥ तैसाराजा
 दशरथ ॥ समुदयातउत्तरला ॥ ६९ ॥ अजपुत्रदेखानपाकशासन ॥ देताजालाक्षेमजा

(४)

॥६॥

८

लिंगन॥ दशरथे धनुष्य चटुन॥ उभाटा कला युध्याशि॥ ७०॥ बाणापाटिबाणसेडित॥
जैसे शब्दामों शब्दयेत॥ किंमेध धारावर्षत॥ शरसेडितयेरिति॥ ७१॥ जैसे बाण
बाहेर निघोनि॥ निवडति कल्पांत सौदामिनि॥ तैसा बाण तुणिरां तुनि॥ निवडुनि
कादि दशरथ॥ ७२॥ दैत्यांचि शिरें बर कस्मात॥ गगनि उडति असंख्यात॥ जैसे
क्षेत्रनि पक्षि उडत॥ प्रभात काळिये कदांचि॥ ७३॥ माघारले दैत्यभार॥ तेकां॥ तो
पुढें जाला रघुपर्व॥ कपर्दे कला युध्यमावा॥ नाना प्रकारें दावित॥ ७४॥ परि दशरथस
मर्थ॥ कापट्यविद्या नचले तेथ॥ जैसे मुखें बाजाळमत॥ उछेदि पंडितये काशब्द॥ ७५॥
जैसामंत्रवादि माहामति॥ त्या पुढें भुलें चेलन चालति॥ तैसा दशरथा पुढें युध्यगति॥ ॥६॥
कदा नचलित त्यांच्या॥ ७६॥ देखेनि दशरथाचा प्रताप तेकां॥ विरथ जाला रघुपर्व॥

पाटिदेउनि ते धवां॥ निघता जाला सवेग॥ ७७॥ छुतें शिंपिल वै श्वान॥ तैसा क्रोधा यमान
 जाला मुक्त॥ रयिं बैसो नियां शर॥ सोडिला जाला प्रतापें॥ ७८॥ जात वेदास्त्र ते अवसरि॥ सो
 डिला जाला देवां वरि॥ अयोध्या धि शें झड करि॥ जकद बस्त्र प्रेरिलें॥ ७९॥ शुक वातास्त्र
 प्रेरिता॥ भड्डल॥ यें बाउ घाल लापवत॥ वास केंडिला समस्त॥ दैत्य गुरुने देखिलें॥ ८०॥
 मग सोडिलें वज्रास्त्र॥ पर्वत फोडिले समग्र॥ माग दशरथें सोडिलें महेश्वर॥ देखे निव
 ज्ञास्त्र विरालें॥ ८१॥ शुक परम क्रोधा यमान॥ काढिला यक निर्वाण बाण॥ रथाचा आंख
 छेदुन॥ टाकित जाला ते धवां॥ ८२॥ आंख छेदितं बकस्मात॥ खालें पडावा जो दश
 रथ॥ कैकै तें देखे निधांवत॥ घालोनि आंख धरिला॥ ८३॥ पर्वताकार रथ धोर॥ हंडाव
 रिभार घेतला समग्र॥ विरश्री येने नृपवर॥ समाचार नेणेतो॥ ८४॥ दशरथें सोडिल नि

(४)

॥७॥

वर्णवाण॥ तोडिला कविचास्यंदन॥ अश्वसहिततुकडेकरुन॥ रणमंडळिपाडिला॥ ८५॥
विरथजालात्रुका॥ दशरथेंकाटिलासुर्यमुखशर॥ ह्मणेयाचेंछेदनशिर॥ कापट्यमु
खासहितपै॥ ८६॥ मागुलिविचारिजंजवंदन॥ शक्रतेहिक्वकब्राह्मण॥ याचारक्षुनि
यांप्राण॥ मुगुरमात्रछेदावा॥ ८७॥ निमिष्यबलगतंगेलावाण॥ मुगुरपाडिलातकिंचेदु
न॥ भयान्नितभगुनंदन॥ पळताजालातेधका॥ ८८॥ देवकरितिजयजयकार॥ पळें
लागलेदैत्यभार॥ जैसामाहांवातसुटनासमयाभुसउडेअंबरि॥ ८९॥ रायेंकोदंडाशि
घाललिंगवसणि॥ तुणिरटेविलाआवरणधातुनि॥ जैसांकुंडामाजिदैदिष्यजगनी
आछादितयाशिक॥ ९०॥ दशरथपाहेसावधान॥ तोकैकैनेहस्तधातुन॥ धरिलाजसे ॥७॥
स्यंदन॥ वर्तमानकळलें॥ ९१॥ आश्चर्यकरिरूपवरा॥ इंद्रादिपाहातिसुरवर॥ आह्माशि

(४४)

जयलभसमग्र॥ कैकैनेदिधला॥१२॥ जैसंधरपडतांअकस्मात्॥ निजबकेंउचलि
तबकवंत॥ तैसाकैकैनेआजिरथ॥ सावरिलारणांगणि॥१३॥ स्वातेउतरोनिदशरथ॥
प्रियेलागिंआकंगित॥ ह्यणेदोनवरमागलरित॥ जेकांआपेक्षितअसतिल॥१४॥ कैकै
आनंदलिथोर॥ ह्यणेमिमागेनजेकावर॥ तेकांमज्जयावेसत्वर॥ ह्यणोनिआषधेतलि॥१५॥
माहायुद्धिंइययपुर्ण॥ कैकैशियावयासकायकारण॥ कायहोतेंतिसवरदान॥ तेचि
कथनअैकापें॥१६॥ पित्रप्रहिकैकैअमतां॥ येकतापशिआलाअनचिता॥ तयाशिप्रा
र्थुनमाता॥ राहावितिजालिकैकैचि॥१७॥ सधिवेसलाअनुह्यनातें॥ मातानिरोपिकै
कैतें॥ उपकर्णसामग्रिलागेलेयेथें॥ सिध्यकरनिर्दंडे॥१८॥ पुष्पधुपदियजारलि॥
सिध्यकरनदेतऋषिप्रति॥ येरप्राणायामकरनिनिश्चिति॥ ध्यानजालानिमग्ना॥१९॥

(9)

॥८॥

तोंकैकैनेचेउनिमस॥ लाविलिऋषिन्या मुखास॥ ध्यानजालिया तोंमाहापुरषा॥ मुख
स्वकरंपुशितसें॥ १००॥ तोंहस्तालागलेकाकें॥ कर्तुलकुमारिचेंकळेलें॥ ऋषिनेआ
पिलेंतेवेके॥ वदनकाकेंतुसंहोकां॥ ११॥ तुजवीजपेशयेईलप्रचंड॥ जगंतहोईलका
केतोंड॥ पुत्रदमकरिलिलउदंड॥ नसतेंवडवाढविशि॥ १२॥ मातेनेसमाचारजेकोन॥
वैगंधरिऋषिचेचरण॥ स्वामिकैकैबाळबलान॥ नैणोनिकर्महेंकेलें॥ १३॥ कांहिंद्यावे
जिवरदान॥ मगऋषिबोलेछपाकुहाउन॥ लणेंहेपतिलागुन॥ जयदेईलमाहारणि॥ १४॥
मजपुजासामग्रीदिधलिसमस्त॥ तोंहस्तालागलेकाकें॥ येशवंत॥ लावेंयास ॥८॥
मईअद्भुत॥ जयप्रासकैकैलें॥ १५॥ असोईद्वआणिब्रह्मपति॥ येशदशरथाचेंवानि
ति॥ वस्त्रंशुषणेंअमरपति॥ देताजालारायातें॥ १६॥ वस्त्रंशुषणेंअद्भुत॥ दिव्यमणिदिधलि

कैकैते॥ येरिनेघातलवेणितें॥ परमप्रकाशवंतजो॥ ७॥ लोंदेवजा न्यार्या बोलेवचन॥
 रायाशिकायबाहेपुत्रसंतान॥ दशरथसुपुत्रवदन॥ नाहिदेखीलेंअद्यापि॥ ८॥ सुरग
 सखणेरायाविरिष्टा॥ त्रिभुवनपतियेईलुत्तुझ्यापोटा॥ जाचेंध्यानलागलेंनिककंटा॥ स
 नकांदिकोंभलांशि॥ ९॥ जोमायाचक्रचाक॥ अंबलनल्लांटांचानायक॥ जोकमळो
 झवाचाजनक॥ तोपुत्रदेखतुजराया॥ १०॥ जोवदशास्त्रांचेंजिह्वार॥ जोअदिमायेचनि
 जवर॥ जोपुराणपुरुषअगेचर॥ तुझापुत्रहोईलराया॥ ११॥ विभांडिकाचापुत्रश्रंगकृषि॥
 हरणिगर्भसंभुतलेजोराशि॥ त्याशिआणाचेंनानासायांशि॥ पुत्रईष्टिकरावया॥ १२॥
 त्यासनाहिंमनुष्यदर्शन॥ देखिलेंनाहिंस्त्रियेचेंवदन॥ शब्दविषयेंमोहून॥ कर
 निगायनआणावा॥ १३॥ शकेंदेउनिदेवललना॥ पाटवाव्यातयावना॥ रंभाउर्वशिशुमानना॥

(10)

॥९॥

झांन्यागायनामदनमुते ॥१४॥ दशरथेईदगुरुचिआज्ञा ॥ घेउनिआला बयोध्याभु
वना ॥ आनंदजालासकळजना ॥ प्रजव्यरणीजालि ॥१५॥ असंभाव्यपिकलिब
वनि ॥ दुष्काळगेला मुळिहुनि ॥ जैशिविष्णुसहस्रनामेकरुनि ॥ माहापापेसंका
रति ॥१६॥ ईकडेविणाटाळमंदंग ॥ शहरि किंकिणिउपांग ॥ देवांगनाघेउनिउप
भोग ॥ वनाशिगेलियासखर ॥१७॥ विभांडिकरूपितपोधन ॥ नित्यप्रातःका
ळिउठेन ॥ करावयाअनुष्ठान ॥ डाकवितिराप्रतिज्ञाय ॥१८॥ मागेआश्रमि
येकरुपुत्र ॥ उचबांधोनिर्यागोपु ॥ सावरिश्रेणीतोपरमचतुरा ॥ वेदाध्यायन
करितसे ॥१९॥ गजव्याघ्रसावजेबहुत ॥ देखतोहोयतोभयाभित ॥ क्षणे
निउंचस्थळबांधोनिसत्य ॥ त्यावरिसुतवैसविला ॥२०॥ विभांडिकअनुष्ठ

॥९॥

न करुन दोष हरये त पर तो न ॥ परम आनंद पुत्र देखो न ॥ आध्यायन संगे स्याते ॥ २१ ॥
 व्याख्येद मुखोद्भूत ॥ सकल शास्त्र पारंगत ॥ याग विधि व्यास मस्त ॥ करत काम कज
 याले ॥ २२ ॥ जे सो विभंडि के लाखना ॥ तो समय पाहुने देवांगना ॥ वेगि पातल्या तया
 वना ॥ सर्व संपत्ति घेउनि ॥ २३ ॥ बरि वेसला कृषि नंदन ॥ तव तेहि आरंभिले गायन ॥ जे
 जैक तां भुलें पंच वाण ॥ स्वयं लावयल याच ॥ २४ ॥ जै शाके वळसौ दामिनि ॥ मंडित दिस
 तिवस्त्राभरण ॥ ज्योनि स्वयं पाहोनि ॥ सुधा पाणि भुठले ॥ २५ ॥ राकम हंग सुस्वर ॥
 गायन जैको निरुषि पुत्र ॥ वरुनि पोहो सादर ॥ स्वयं सुंदर न्याहा कित ॥ २६ ॥ लवने वक्रय
 स्तुहा वभाव ॥ दाविति नाना लाघव ॥ श्रुंगिने देखतां चि अर्पुर्व ॥ भय वाट मनाशि ॥ २७ ॥
 गायन जैक तां सुस्वर ॥ संतोष वाटे अपार ॥ हणें मज धरा वया साचार ॥ पातले को

(11)

॥१९॥

णनकठेहं॥२८॥भयेकरुनितेवेळ॥शृंगिवायुवेगिंपळाळा॥सेवंचिविलोकिपरतोनि
उळा॥सुंदरस्वरुपंतयांचि॥२९॥विभांडिकअनुष्टुपनकरुन॥आश्रमाशि येतपरतोना॥
तोदेवांगनागेलियातेथुन॥आपभयेकरुनि॥३०॥ह्मणेविभांडिकाशिहंकेळे॥
तरिआश्रमाशिआपिलताकाळ॥याळुगिंदोनप्रहरसखर॥जातिलेखेंकरोनियं॥३१॥
असोपिताआळाआश्रमाशि॥शृंगसांगेतयापशि॥ह्मणेयेथेआलेहोतेतापशि॥३२॥
पमाजाशिअसेना॥३३॥मितयांशिदेखेनि॥पळालेदेहलोभेकरुनि॥आतांतेनये
तिदुसरेनि॥खंतिमनिवाटतसे॥३४॥विभांडिकह्मणेपुत्रशि॥जरिआश्रमाआले
संतऋषि॥तरिआपणआतिथ्यकरावेंसंशि॥पुजाविधिकरुनियां॥३५॥असोप्रा
तःकाळिविभांडिकमुनि॥गळाअनुष्टुपनालागुनि॥शृंगचिताकरिमनि॥ह्मणेकैन

॥१९॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com